

**THE INSTITUTE FOR  
ADVANCED STUDIES  
OF WORLD RELIGIONS**

**FILM-STRIP NO.  
MBB-1971-69-28**

**BUDDHIST SANSKRIT  
MANUSCRIPTS**

1. FILE STRIP NUMBER

2. Source

HASTAMUDRA

3. Title

4. Additional title, shortened forms of title etc.

No. S. + 880 = A. D.

5. Year in which MS was copied  
(Nepali Samvat and Christian Era)

X

6. Name of scribe

NEPALI PAPER

7. Material (palm leaf, etc.)

ANCIENT NEWARI

8. Script

20 cm x 8 cm

7

9. Size

10. Lines to a page

24

11. Number of leaves in complete work

X

12. Missing leaves

13. Author and Date of composition  
(if given)

X

14. Number of Chapters

15. Remarks

Excellent illustration of Hastamudra

with explanation

प्राप्ति  
उद्योगाधिकारी

प्राप्ति  
उद्योगाधिकारी

प्राप्ति  
उद्योगाधिकारी

प्राप्ति  
उद्योगाधिकारी



प्राप्ति  
उद्योगाधिकारी

प्राप्ति  
उद्योगाधिकारी

प्राप्ति  
उद्योगाधिकारी

प्राप्ति  
उद्योगाधिकारी

१२

ॐ १२  
ॐ द्वजारावदी॥



१२८

रत्नवज्ञात्मिर्गी॥

१३

ॐ १३  
ॐ द्वजाकाम्मी॥



१३८

रत्नवज्ञाम्मी॥

१४

ॐ १४  
ॐ द्वजरक्षाही॥



१४८

रत्नवज्ञाम्मी॥

१५

ॐ १५  
ॐ द्वजायक्षाही॥



१५०

रत्नवज्ञाम्मी॥

३४८

उङ्घाराहासां॥



३४९

हनहात्यारितये॥

३५०

उङ्घाधम्भजी॥



३५१

हनहात्यास्यविकामा॥

३५२

उङ्घातीश्वर्धे॥



३५३

हनहात्यारितयेणाग्रहनप्रलापयुत्तमधे॥

३५४

उङ्घाद्युम्भी॥



३५५

हृषित ४

उंद्रजान्तर्येषु ग्रामा ॥



१६८

ग्रामन्तर्येषु ग्रामा ॥

(प्रयत्न)

उंद्रजान्तर्येषु ग्रामा ॥



१६९

ग्रामन्तर्येषु ग्रामा ॥

पीठांड

उंद्रजान्तर्येषु ग्रामा ॥

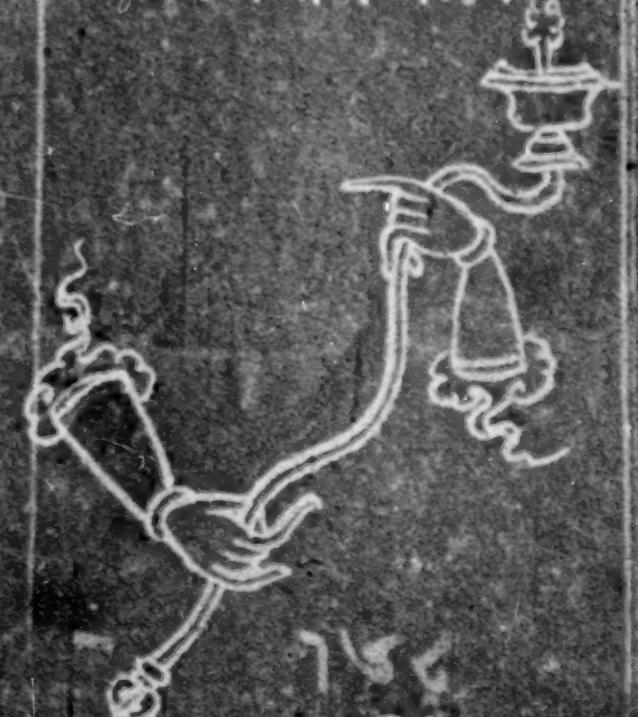


१७०

ग्रामन्तर्येषु ग्रामा ॥

दक्षा

उंद्रजान्तर्येषु ग्रामा ॥



१७१

ग्रामन्तर्येषु ग्रामा ॥

प्रीत ५

उँदजासूष्टिवै॥

हित १

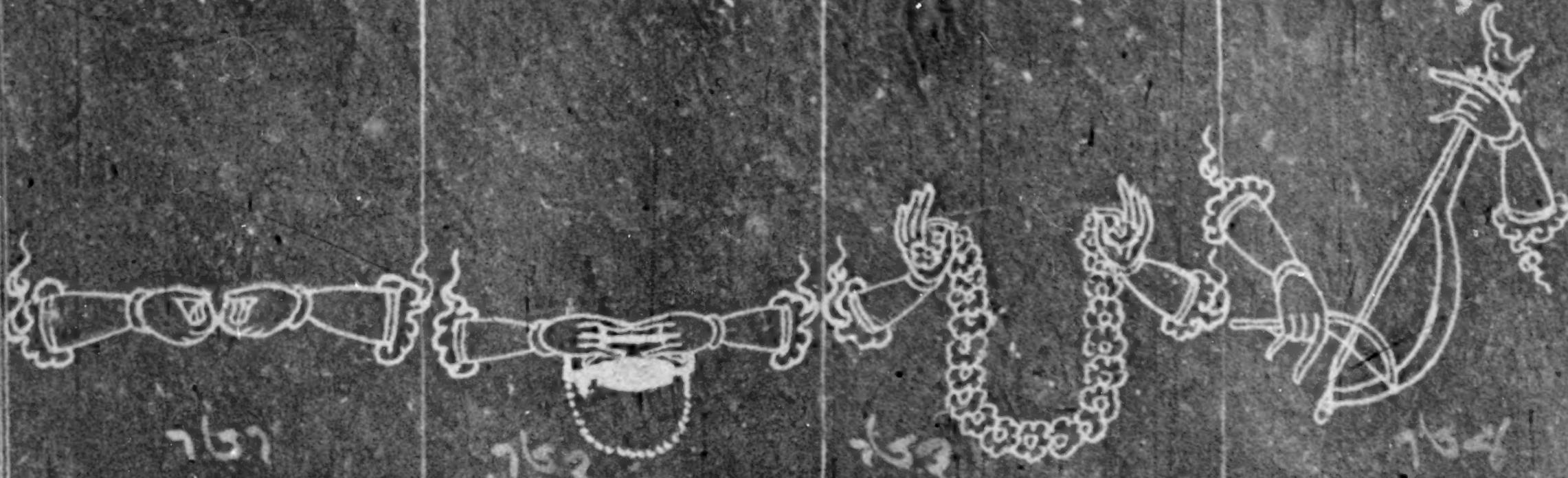
उँदजलाल्पहै॥

प्रीत २

उँदजासूष्टी॥

बक २

उँदजापीरजीषा॥



न ५

गनदजासूष्टिवैवयरा॥ गनलाल्पाशिवयी॥

न ६

गनमलाल्पस्ती॥

न ७

गनशीलाशिवयी॥

पीठ ४

ऊंसर्वथोकरसानिर्वाठ ऊंगवहकिरहाँ॥  
नसरहाँ॥०५



हविराज

आनणउप्रकविमालीं॥ गनदस्यूर्धीं॥

हृष्ण

ऊंठूर्जमिहाँ॥



पीठ ५

ऊंगजतामाधायद्व



१४२

गनदस्यूर्धीं

१४३

गनमस्त्रिमिहृष्णप्राप्तम्

प्राप्ति

कुवजागस्त्रम् ४

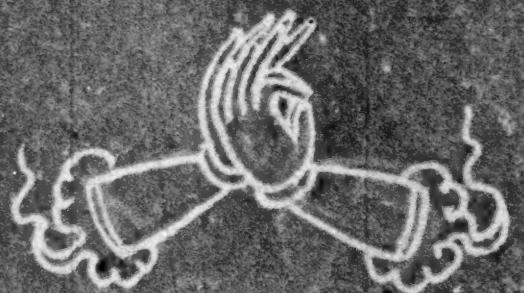


१५६

कान्तगस्त्राणीयस्तिनया॥

प्राप्ति

उम्मेतीहृतमायत्तावाञ्जस्तायजस्ताघदहिनि  
है॥



१५७

कान्तप्रस्त्राकार्वक्षत्तया कान्तप्रस्त्राकार्वक्षत्तया कान्तप्रस्त्राकार्वक्षत्तया  
कान्तप्रस्त्राकार्वक्षत्तया कान्तप्रस्त्राकार्वक्षत्तया कान्तप्रस्त्राकार्वक्षत्तया॥

प्राप्ति

उम्मेतीहृतमायत्तावाञ्जस्तायजस्ताघदहिनि  
है॥

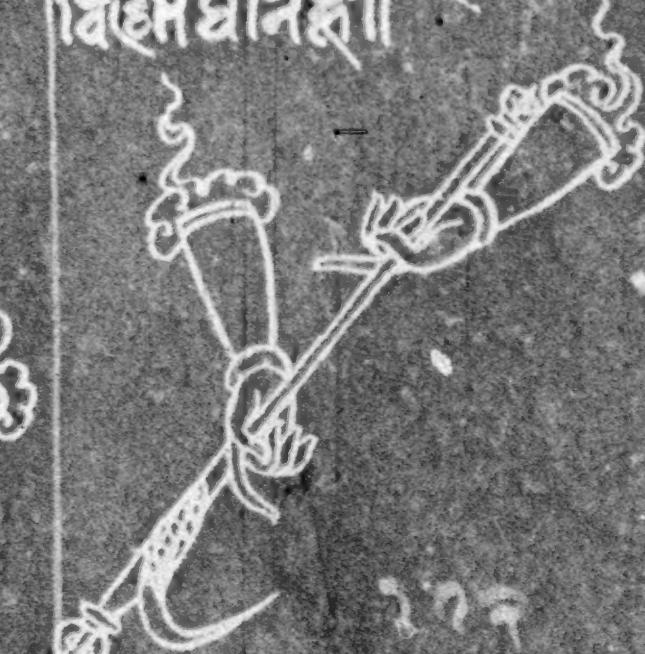


१५८

कान्तप्रस्त्राकार्वक्षत्तया॥

प्राप्ति

उम्मेतीहृतमायत्तावाञ्जस्तायजस्ताघदहिनि  
है॥



१५९

कान्तप्रस्त्राकार्वक्षत्तया॥

बक १२०

कक्ष १२

छेत्र १४

बक १५

उँकालिनीमहाधानिनी  
हू॥

उँदजगहू॥

उँजन्यहूँसक्यकम्बियुपरिशानविषिण  
प्रधावित्तिहू॥ छटहस्याता॥



१५१

गनकवर्वक्योहु॥



१५२

गनदकिषमध्यासीमुलिरामवदपरिनयक् गनदकिषानश्चिकित्या  
मृत्युजु॥



१५३

योह॥



१५४

कल्प

त्रिपात्र

त्रिपात्र

त्रिपात्र

उंडुनदारुंडुनदारुं

उंडुनारुंडुनारुं

उंडुनदारुंडुनदारुं

उंडुनदारुंडुनदारुं



१७०

भन्दुउंडुर्दुं



भन्दुसुंडुभन्दु



१७१

भन्दुउंडुतारुंडुर्दुं



१७०

भन्दुप्रिविकाठापरा

द्विष इविष

उँवजावठाहाशाख्तुलि नमस्ताम्भावद्वीयाशा  
कम्भाम्भा ॥ ७ ॥

पानस्त्रुदिक्तात्तद्विष  
शा॥ उँवजावज्ञाम्भाहाशा

इविष ॥

नाम २

उवजारवद्वा

उँवजाप्रद्वाहां ॥

१२२



गानयृक्षाग्नियितना ॥ गानवम्भावा ॥ इविष ॥

गनवाभ्यु ॥

गनव्युर्युर्गनी

ଶବ୍ଦିକ ୨୫

ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ॥

ଶବ୍ଦିକ ୨୬

ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ॥

ଶବ୍ଦିକ ୨୭

ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ॥

ଶବ୍ଦିକ ୨୮

ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ॥



୧୬୭

ଶବ୍ଦିକ ୨୯  
ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ॥



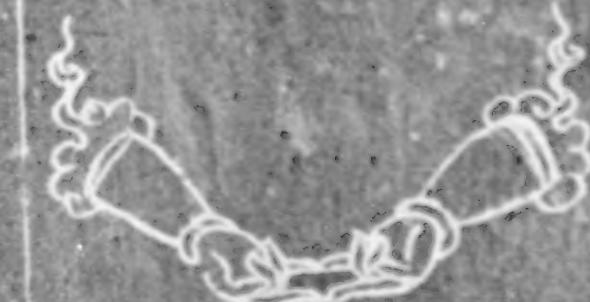
୧୬୮

ଶବ୍ଦିକ ୩୦  
ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ॥



୧୬୯

ଶବ୍ଦିକ ୩୧  
ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ॥



୧୭୦

ଶବ୍ଦିକ ୩୨  
ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ॥

ঘীৰু  
উক্তব্যাদী॥

১০৭



গুৰুকৃতাবাদী॥

ৰক্ত  
উক্তব্যাদী॥

১০৮



গুৰু  
উক্তব্যাদী॥

১০৯



গুৰুব্যাদী॥

ঘীৰু  
উক্তব্যাদী॥

১১০



গুৰুব্যাদী॥

पीठ ३

उँचाकुड़ाही॥



१४९

कन्दवदाशितर्यै॥

पक ४

उँचमेकुड़ाही॥

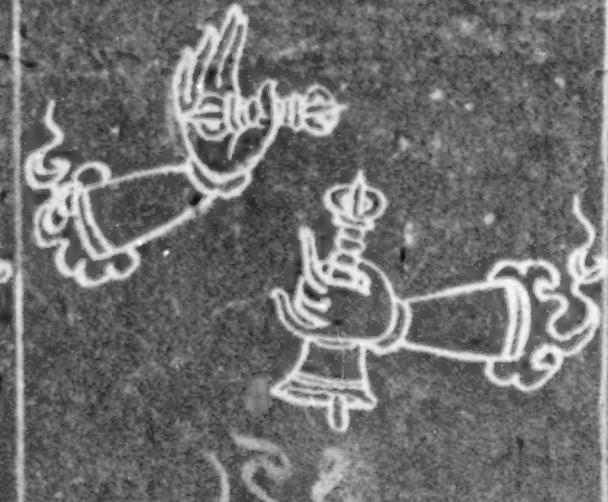


१५०

गदधाकारितर्यै॥

पीठ ५

उँचमेकुड़ाही॥



१५१

गतज्ञरुपेणदत्तै॥

पीठ ६

उँचजस्त्वाही॥



१५२

गीतकुड़ाकर्षर्यै॥

नील १०

ॐ वज्र ब्रह्म वरही ॥



२०५

सतावज्ज्ञै धर्म वरही ॥

पील ११

ॐ वज्र मंत्रोही ॥



२०६

सतावज्ज्ञै धर्म वरही ॥

बक १२

ॐ वज्र वाही ॥



२०७

सतावज्ज्ञै धर्म वरही ॥

विष्णु १३

ॐ विष्णु वज्रोही ॥



२०८

सतावज्ज्ञै धर्म वरही ॥

३५५

ॐ वज्राय राम ॥

३५६

ॐ वज्राय राम ॥

३५७

ॐ वज्राय राम ॥



२०१

गत शूर्य ए रात र्यगी ॥ गत विकास मिष्ठान ध्वनि ध्वनि ॥ गत वज्र स्मृति पहचान ॥ गत वज्र स्मृति पहचान ॥

३५८

ॐ वज्राय राम ॥



२०२

३५९

ॐ वज्राय राम ॥



२०३

पीत॒

ऊँकजमालादी॥



२१२

गवेषतनामाक्षरसामान्यावादयरा।

३क३

ऊँकजगीरादी॥



२१३

गवेषतनामाक्षरसामान्यावादयरा।

हरितरविष्ट्

ऊँकजनृथादी॥



२१४

गवेषतनामाक्षरसामान्यावादयरा।

शुक्रा

ऊँकजधूषादी॥



२१५

गवेषतनामाक्षरसामान्यावादयरा।

पीठ १४

उँवजावीथाही॥



२०८

गतकावर्वधारयेत्॥

कृष्ण १५

उँवजावक्षाही॥



२१०

गतकैक्षायप्रीक्षयेत्॥

पीठ १६

उँवजामहिवही॥



२११

गतवजामहिवीत्येत्॥

हिंगा

उँवजावक्षाही॥



२१२

गतलाञ्छाक्षयेत्॥

प्राप्त २

उत्तमायद्विष्टिवहं॥



२२१

गतायमनर्थं दग्धयत्वा ॥ तात्त्वं अकृष्टायद्विवं॥

प्राप्त ३

उत्तमायद्विष्टिवहं॥



२२२

गतायमनर्थं दग्धयत्वा ॥ तात्त्वं अकृष्टायद्विवं॥

प्राप्त ४

उत्तमवृत्तेयद्वात्तिविष्टिवहं॥  
मनिवहं॥



२२३

गतायमनर्थं दग्धयत्वा ॥ तात्त्वं अकृष्टायद्विवं॥

प्राप्त ५

उत्तमवृत्तेयद्वात्तिविष्टिवहं॥



२२४

गतायमनर्थं दग्धयत्वा ॥ तात्त्वं अकृष्टायद्विवं॥

# ଯାତ୍ରା ଉଦ୍‌ବ୍ୟାପ୍କାଦୀ



27

## ବକ୍ତା କଜାଦୀଆହୀ।



5

# विष्णु ८

## ॐ कामाक्षी



10

## पीठ । कुरुक्षेत्रादी ॥



23

क्षमायथकरणुकहस्ता ॥ रादादीययस्त्रियोऽप्यनुवायस्ता ॥ तत्त्वं धर्मोऽप्यनुवायस्ता ॥ तत्त्वायाप्युत्थधर्मः ॥

धर्मल-१०

तु द्वय राहीं



गतं यज्ञवर्णं धर्मया। रामवर्णं धर्मया॥

शाहिरा ११

ॐ ब्रह्माद्यादी



शनवजायज्ञलैमवया शनवामात्यदायविकर्त्त्वात्

अस्त्रगांठ

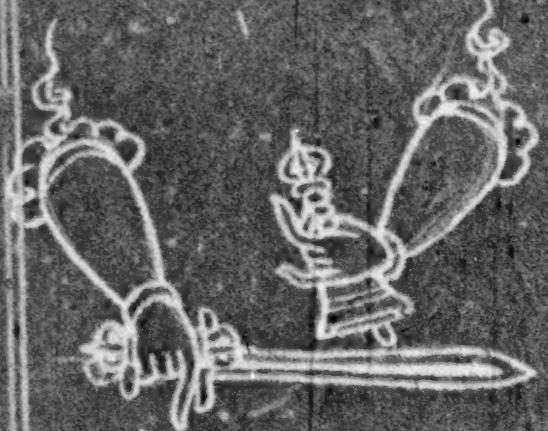
## ॐ जागिनीष राही



## ମହାତ୍ମା

ॐ वज्राशीदा





२२४

गनामुक्तीमवयम्॥



२२५

गनविमुक्तमवयम्॥ गनविमुक्तमवयम्॥ गनविमुक्तमवयम्॥

२२६

कुम्भकमीदा॥

२२७

कुम्भकमीदा॥

२२८

२२९

कुम्भकमीदा॥

२२१

२२१

कुम्भकमीदा॥



२२६

कृष्ण

ऊँ द्वजायाह्नादौ॥

२३१



गनयाह्नादौ॥

वक्त्र

ऊँ द्वजस्त्रियाह्नी॥

२३२



गनस्त्रियाह्नी॥

विष्णु

ऊँ द्वजावह्नादौ॥

२३३



गनविष्णुयाह्नादौ॥  
गनवास्त्रियाह्नी॥

श्री

तगृस्त्रियाह्नादौ॥  
तगृस्त्रियाह्नादौ॥  
जधात्रियाह्नादौ॥

२३४



५३१४

ॐ ग्राम गिरही॥



२३३

५३१५

ॐ गिरानशाणाही॥



२३५

५३१६

ॐ गिरानशाणाही॥



२३६

५३१७

ॐ गिरानशाणाही॥



२३७

गतहरायकिलक्ष्मीध्या॥ गन्तव्यामयमस्तुतवक्तृं गन्तव्यामयदमज्जर्वी॥  
यक्षिशश्वारेयात्मिमय॥ दक्षिणात्मरय॥

प्रद्युम्नादर्शिष्ठप्त्वा  
द्वाक्षयोरुड्जस्त्वसम्य  
मतयात्प्रयणिदि॥



गनवड्सुखारिवर्या॥

यूर्बवद्विष्टवसादाशमनसासिद्विक्षुख्यातिवा॥ शत्रोऽघोदिवाग्रायुजाप्तं  
लाश्याक्षयात्ता वज्रजपंजशृदिवनक्षमतावत्क्षयात्ता वज्रसत्त्वं  
दद्यावज्ञवद्वसन्तुर्वज्रजप्तेगायत्रैश्वजकम्भक्षाहवै४ अऽग्रै४  
द्वृत्ताहंवज्रावीजा वसेऽप्तु एवीजाऽप्तुक्षिहै४ त्रिय० वज्रसत्त्वालय  
शाऽप्तुक्षिजाप्तुहंवैश्वाहंवज्रावीजाऽप्तु दिनिष्वत्तुसत्त्वावज्रसत्त्वाप्ता  
शासन्तुर्वज्रवद्वात्ता वज्रायाशोपयित्तुपरिश्वायै४ वज्रावज्रसत्त्वाप्तु  
रुपावावप्तवात्ता एवाप्तित्तुपरिश्वायै४ वज्रसत्त्वाप्तुपरिश्वायै४  
वज्राप्तुरुपात्तुष्वाहित्तुपरिश्वायै४ वज्राप्तुविहै४ वज्राप्तुरुपात्तुष्वाहित्तुपरिश्वायै४

नील २

उंकजस्तुवाप्तिविलम्ब्या  
द्यामि॥



२११

कृत रुद्ध्य छन्दो॥

सीत २

उंदतकजगाप्तिविलम्ब्या  
द्यामि॥



२१२

गीतवर्वपानी॥

उक्त ४

उंष्ट्रेवजगाप्तिविलम्ब्या  
द्यामि॥



२१३

गीतस्त्रानारितयो॥

श्वामो

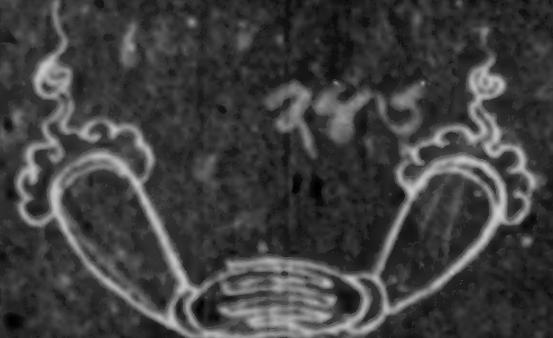
उंकजगाप्तिविलम्ब्या  
द्यामि॥



२१४

गीताररण्यपानी॥

द्रुनिष्याया द्वितीय उत्तरार्धम् यम सह श्वर्यम् यज्ञार्थिम् ध्याया एवापूर्ववद्यज्ञम् यो दृश्यादिस्थितिः ॥  
 यीग । योग ॥ उक्तज्ञवद्यज्ञम् यो दृश्यादिस्थितिः ॥  
 उक्तज्ञवद्यज्ञम् यो दृश्यादिस्थितिः ॥ उक्तज्ञवद्यज्ञम् यो दृश्यादिस्थितिः ॥  
 शोहस्यात् ॥



प्राप्तरुमिस्थितिः ॥



प्राप्तयाकारी ॥

२४८



प्राप्तयाकारी ॥

२४९



प्राप्तयाकारी ॥



उंचामेवजायाप्रियिह  
मृत्यादयाति॥



३८३

नामारण्यदानं श्वामजा

मदनकरमुद्गथगर्विनशीदवदेयाप्रितिश्वामीरामवक्षमुद्गथ  
गमाश्वमासिरिसंक्षिप्तहृषीकेतुशाखुति॥ नस्मिन्नक्षमम्बेत्तथाम  
समाश्वतातिसंदृढ़मुद्गथगरावजस्तराश्वतमज्ञातुश्वमर्य  
त्विश्वशास्त्रेत्तथामाशिष्यकसमग्रप्रिगतवत्तातिरिध्यायज्ञश्व  
मथगरावजध्येसमग्राश्वताप्रिगमस्तुरावश्वश्वश्वास्त्रेत्तथापराय  
प्रियरावक्षुताकावस्तुरावद्युत्तथास्त्रेत्तथामार्त्तस्त्रेत्तदेवव  
त्तान्तरिक्षयस्त्राप्तमुद्गथामर्त्तिस्त्रवक्षुदिरिष्टदीपकात्ताय  
नातिरिष्ट्यमानंविराया॥ उक्तवत्तातिरिष्टरामाश्वूवद्वज्ञावत्तम

ॐ अमृतं विद्वा अमृतं विद्यते विद्युत्तमं विद्यते ॥ १० ॥



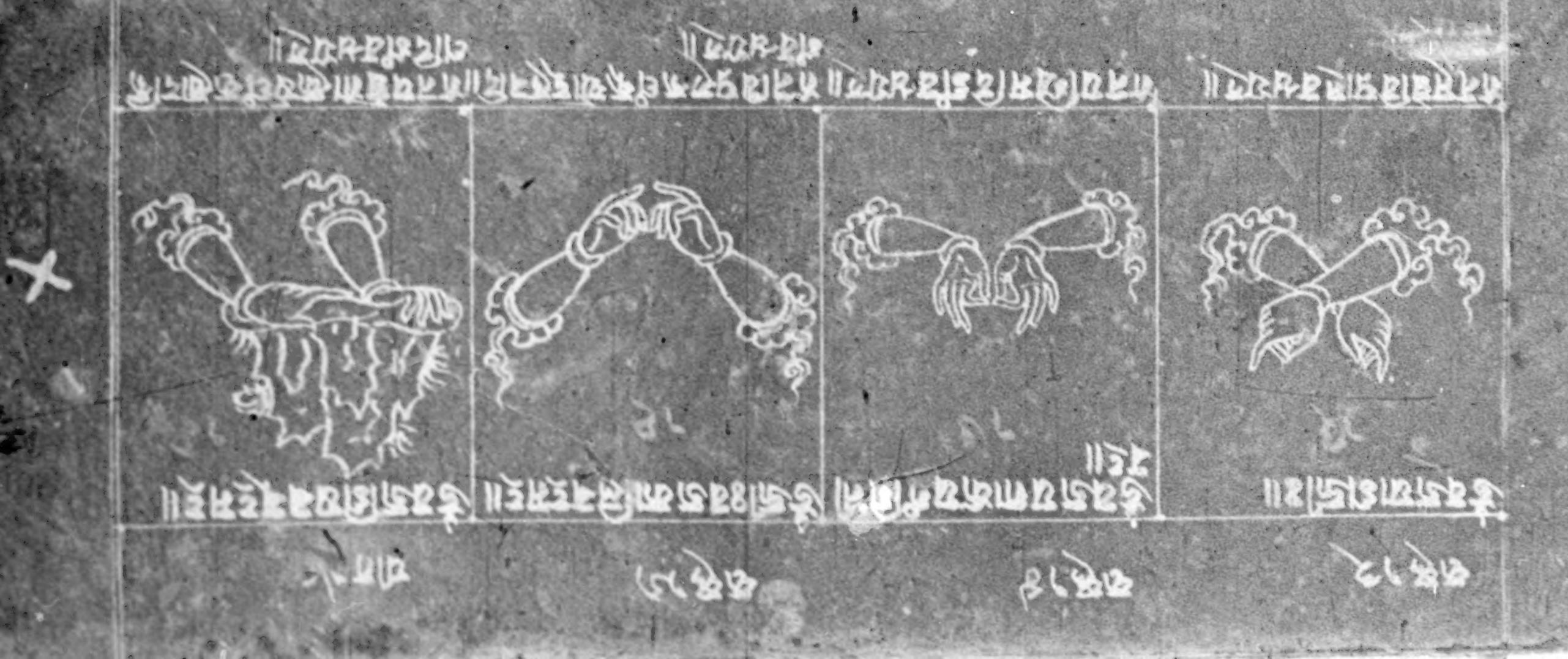
## ननदाधर्मीहिता

सातरुस्य गति कुसुर तनव वदा रिन यं यत् शा रिन अना रिन यं वक्ता



ॐ ब्रह्म यज्ञ वाय वाय वाय  
स्तुता श्री





१०१०

१०११

१०१२

१०१३

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كاظم



كاظم

كاظم

كاظم



كاظم

كاظم

كاظم



كاظم

كاظم

كاظم



كاظم

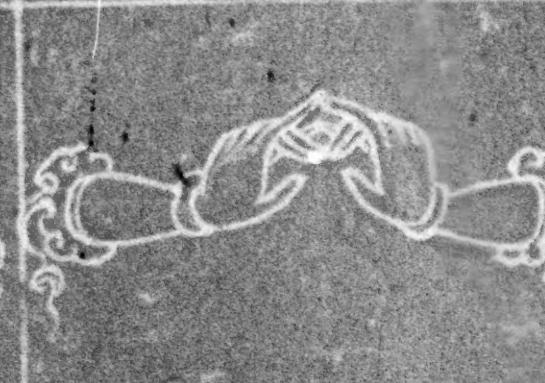
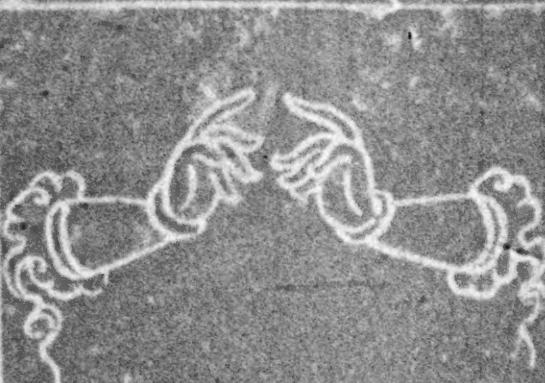
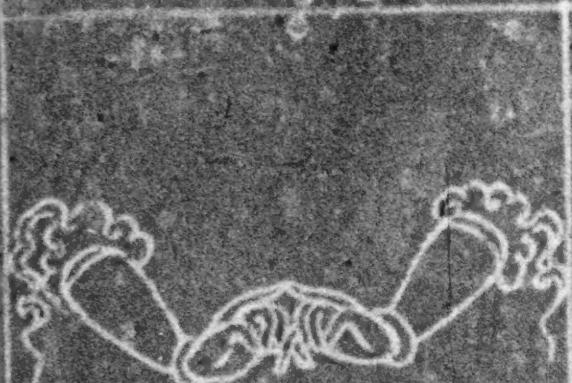
كاظم

॥ ୧୦ ॥

॥ ୧୧ ॥

॥ ୧୨ ॥

॥ ୧୩ ॥



॥ ୧୪ ॥

॥ ୧୫ ॥

॥ ୧୬ ॥

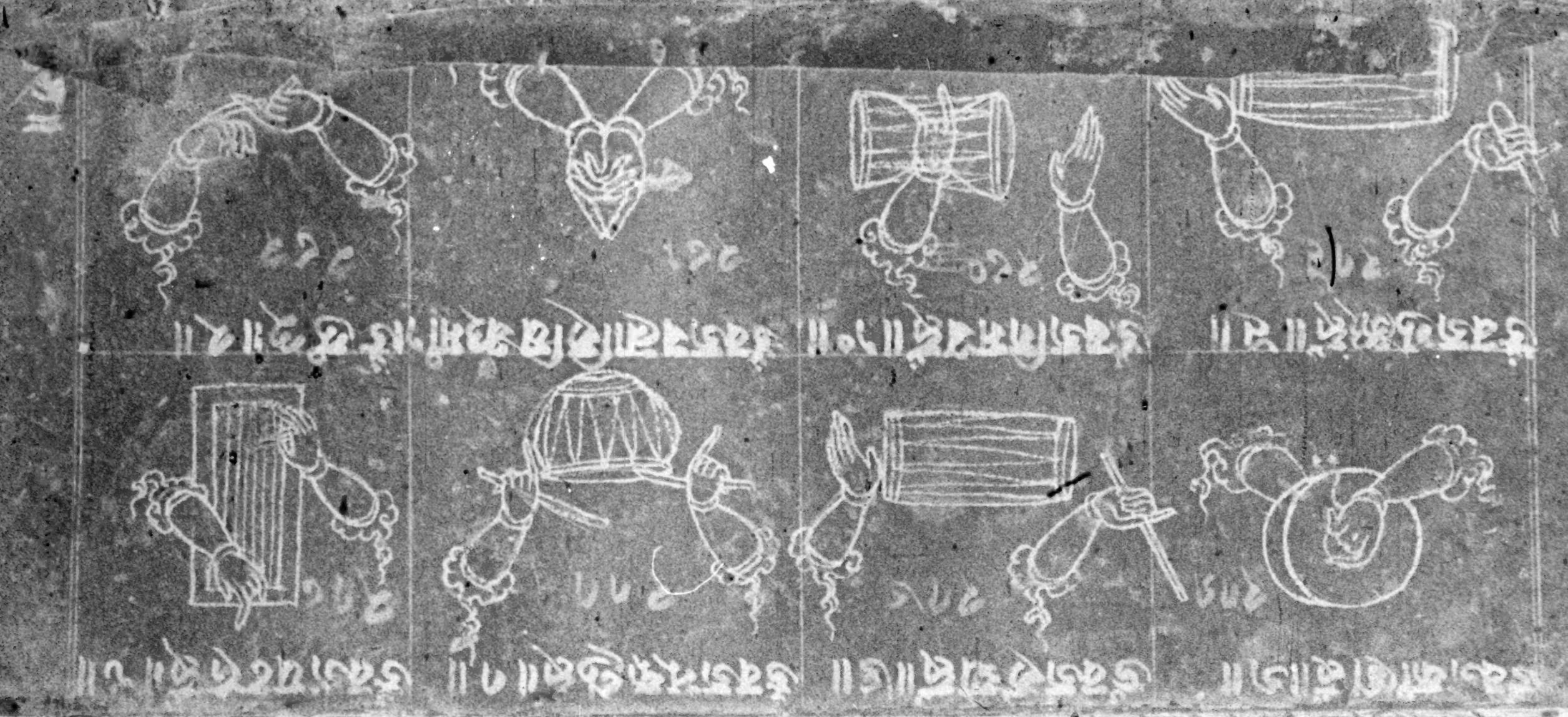
॥ ୧୭ ॥

୧୮

୧୯

୨୦

୨୧



ପାତାକାରୀ  
ପାତାକାରୀ

ପାତାକାରୀ



୧୯୨୬

ପାତାକାରୀ



୧୯୨୦

ପାତାକାରୀ



୧୯୨୮

ପାତାକାରୀ



୧୯୨୨

ପାତାକାରୀ

ପାତାକାରୀ

ପାତାକାରୀ

ପାତାକାରୀ



୧୯୨୮



୧୯୨୦



୧୯୨୮



୧୯୨୨

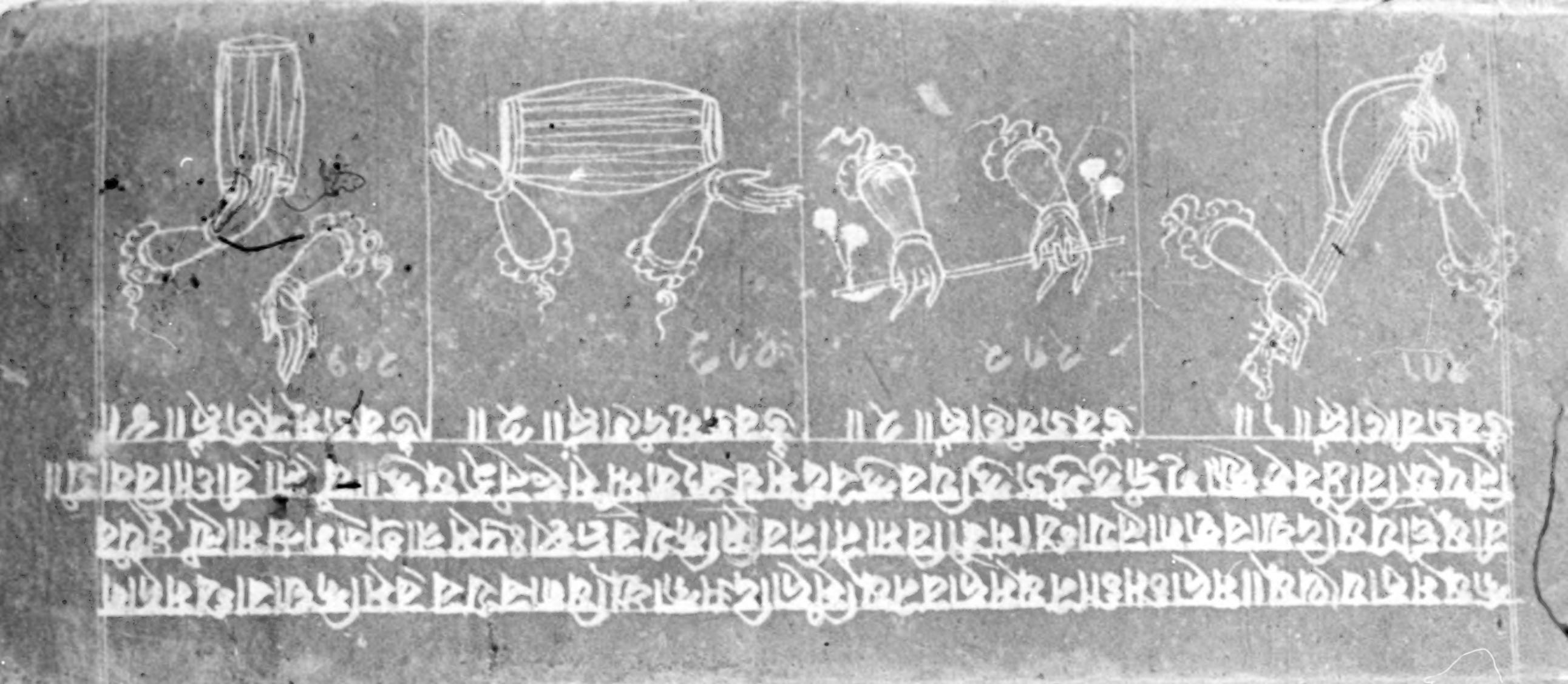
ପାତାକାରୀ

ପାତାକାରୀ

ପାତାକାରୀ

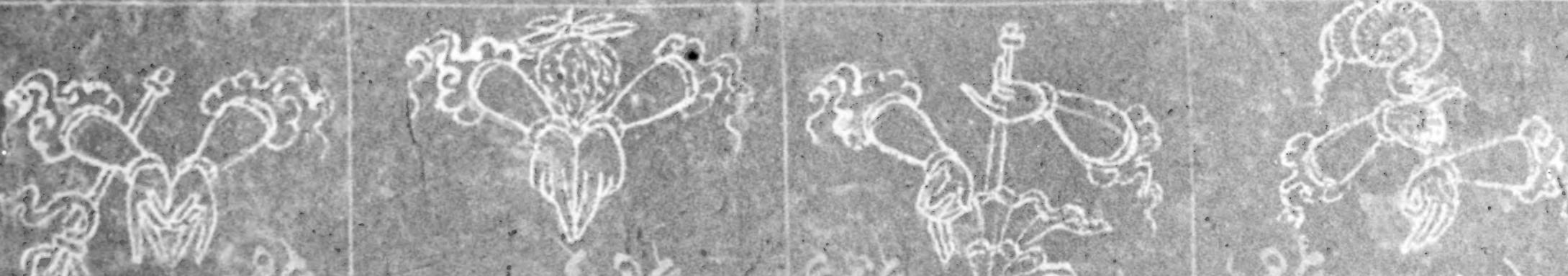
ପାତାକାରୀ







اَللّٰهُمَّ اسْمُكَنْتَنِي فِي دِيْنِكَ وَمَنْهُ فَلَا يَرْجُوْنِي  
اَللّٰهُمَّ اسْمُكَنْتَنِي فِي دِيْنِكَ وَمَنْهُ فَلَا يَرْجُوْنِي



ननृजाजीनिष्ठाकृथाः ॥ ननृजापितार्तः ॥

ननृजापितार्तः ॥

उक्तजाप्तिर्तः ॥



प्रथा ५

उक्तजाप्तिर्तः ॥



प्रथा ५

उक्तजाप्तिर्तः ॥



प्रथा ६

उक्तजाप्तिर्तः ॥



प्रथा ७

गणेशाय श्रीकृष्णाय श्रीवाच्चिष्ठाय

उक्तं यत्तद्देहं ॥



उक्तं वक्तव्यं ॥



पात्र २

उक्तं विवरणम् ॥ उक्तं विवरणम् ॥



पात्र ३



पात्र ४

गन्तव्यपूर्णीयादित्तानी ॥ अनासनादित्तानी ॥ अनिरुद्धमत्तुलादित्तानी ॥  
गन्तव्यपूर्णीयादित्तानी ॥

उद्धजस्तुहः ॥



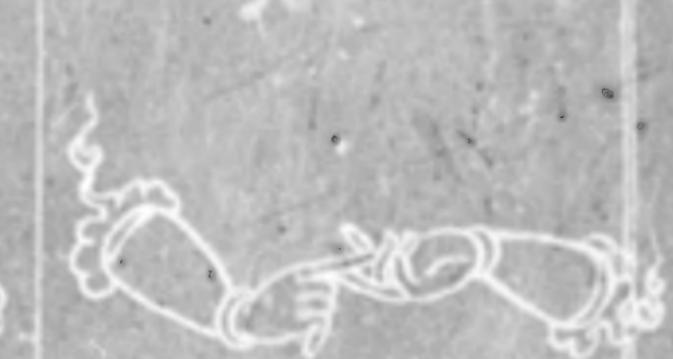
उद्धजास्तुहः ॥



उद्धजद्भुहः ॥



उद्धजायुधीह ॥



ननदायापितानै॥

उक्तावलाक्ष्मी॥



४३

ननदायापितानै॥

उक्तावलाक्ष्मी॥



४४

ननदायापितानै॥

उक्तावलाक्ष्मी॥



४५

ननदायापितानै॥

उक्तावलाक्ष्मी॥



४६

नन्दपार्वीदयार् ॥

पितृव्रमसीदयार् ॥

नन्दाकर्णदयार् ॥

उद्गाध्युपदवस्त्रादय  
याद्येयामीकृत्वास्त्रा ॥

उद्गाध्युपदवस्त्रादय  
याद्येयामीकृत्वास्त्रा ॥

उद्गाध्युपदवस्त्रादय  
याद्येयामीकृत्वास्त्रा ॥



प्रथा ८



प्रथा ९



प्रथा १०

गन्तव्यवशिष्यते ॥

उक्तजपाशाहौ ॥

३१



कल्पन

गन्तव्यवशिष्यते ॥

उक्तजपाशाहौ ॥

३२



कल्पन

गन्तव्यवशिष्यते ॥

उक्तजपाशाहौ ॥

३३



कल्पन

गन्तव्यवशिष्यते ॥

उक्तजपाशाहौ ॥

३४



कल्पन

गत लक्षणिक शोर ॥

गत सातावधन शोर ॥

गत गीता हिन्दी ॥

गत दस्ता हिन्दी ॥

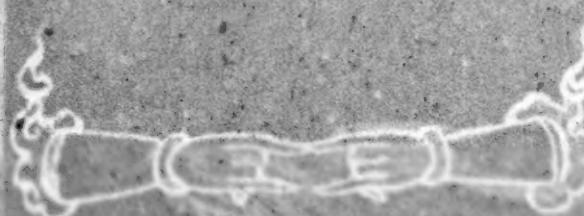
उत्तर द्वारा अमर लक्षण शोर ॥ उत्तर द्वारा अमर गीता हिन्दी ॥ उत्तर द्वारा अमर गीता हिन्दी ॥ उत्तर द्वारा अमर गीता हिन्दी ॥  
दोनों द्वारा मिला यूज है ॥ लेयोर प्रिया पूज योग ॥ यारा निता यूज जाई ॥ यारा निता यूज जाई ॥

33

34

35

36



प्रयोग

प्रयोग

प्रयोग

प्रयोग

अत्यन्तं द्वारा उत्तमं रूप है। अत्यन्तं

जात्यात् द्वारा उत्तमं रूप है। अत्यन्तं

कनदवारं वर्णदयारं ॥

गनहस्यलथादिजितौ ॥ कनदस्मालंकारंदयारं ॥

कनदकुक्कमोहनयंकयोर् ॥

उसद्वलाभगताद्वाहीकारस्तु उसद्वलाभगताद्वाहीकारस्तु  
उसद्वलाभगताद्वाहीकारस्तु उसद्वलाभगताद्वाहीकारस्तु  
उसद्वलाभगताद्वाहीकारस्तु उसद्वलाभगताद्वाहीकारस्तु  
जामयहम्मुक्तुविद्वामयह ॥ तिजोजसील्लान्तुरप्जामयहंकारद्वाहीकारस्तु  
समहस्तुविद्वामयह ॥ तिजोजसील्लान्तुरप्जामयहंकारद्वाहीकारस्तु  
तमयह ॥



तस्य शैष्ठमेव तस्य वर्त्तय दश दिव्य द्रुक्ता द्वाग वर्तीय विद्विश्वा मानीय द्वय विद्विश्वा ॥ ४५ ॥

उत्सव अगता पूर्व यज्ञामय उत्सव अगता पूर्व यज्ञा ॥ उत्सव अगता वीय यज्ञा ॥ उत्सव अगता यज्ञा ॥  
रिमुक्त रक्त गत समयहो ॥ मयतम इस्त्र उत्सव यज्ञा ॥ पूर्वम इस्त्र वलाय दूर ॥ यस्त्र इस्त्र यज्ञा ॥



पीता ।  
सन्तप्तास्त्वात् ॥



स्वराम  
कृष्णदेवाम् ॥



बला २  
गनदीयैश्चात् ॥



## मनसाधारण

तन दैषाहिनयै॥

भान्पृथ्यारिनये॥

गुनदीपारिनयं॥

तत्त्वार्थिनयै॥



गोपसाध्याशिनये ॥

मनसालाहिनयः।

गत शीर्षादितद्यै॥

भावनृसारिनयं०

